मेरा विश्वास है। संगीत एक प्रकार की नाद-भाषा है, ऐसा जो कहा जाता है वह गलत नहीं। प्रत्येक गीत में संगीत के विभिन्न वाक्यों की सुसंगत रीति से रचना होती है। वे गीत सीखते समय उनके वाक्यों की ओर ध्यानपूर्वक देखना पड़ता है। यह 'Laws of music Composition' (गीत रचना के नियम) विदित होने पर प्राचीन ग्रन्थों में जो अनेक राग उनके आरोहावरोह सहित कहे हुए दिखाई देते हैं, वे भी पुनः प्रचार में सहज ही लाए जा सकते हैं। अस्तु, मेरी तो आयु हो चुकी है, अतः इस विषय की अधिक सेवा मेरे हाथों से आगे कितनी व कैसी हो सकेगी, यह नहीं कहा जा सकता। कारण, यह सब भगवान की इच्छा पर निर्भर है। फिर भी मैंने अपनी उम्र में जो ज्ञान सम्पादित किया, उसका एक बड़ा भाग तुमको देने से मेरी बहुत-कुछ जिम्मेदारी कम हो गई है। तुम तरुण, विद्यासम्पन्न, बुद्धिमान तथा संगीत प्रेमी हो, अतः मेरे द्वारा पूर्ति को हुई सामग्री में जिन बातों का अभाव तुम्हें दिखाई देगा, तुम उसकी पूर्ति स्वरसंपादित ज्ञान से सहज ही कर सकोगे।

कुछ महत्त्वपूर्ण बातों के सम्बन्ध में मेरे द्वारा की गई शोध अभी तक निर्णयात्मक अवस्था में नहीं पहुँच सकी है, यह तथ्य समय-समय पर मेरे भाषणों से तुम्हारे ध्यान में आगया होगा; उसी प्रकार कुछ बातें संभव होने पर भी मेरे हाथों से पूर्ण नहीं हो सकीं। उदाहरणार्थ :—

१. सामवेद के समय के स्वरों की तुलना आगे के ग्रन्थकारों के स्वरों से कहाँ तक हो सकती है, यह देखना।

२. रत्नाकरादि प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित रागों का सुबोध स्पष्टीकरण उन ग्रन्थों में दी गई सामग्री से करके दिखाने का प्रयत्न करना।

३. प्राचीन काल में 'राग-रागिनी पुत्र' आदि व्यवस्था किन तत्त्वों पर हुई होगी, उसकी योग्यायोग्यता तथा वैसी व्यवस्था प्रचलित संगीत में हो सकती है कि नहीं, ऐसा करना विशेष हितकारी होगा अथवा नहीं, इन प्रश्नों पर भली प्रकार विचार करके कुछ स्पष्टीकरण करना।

४. राग व रस का प्राचीन एवं अर्वाचीन दृष्टि से सम्बन्ध पुनः प्रस्थापित करने का प्रयत्न करना।

५. श्रुति व स्वरों का प्राणियों के शरीर पर होने वाला परिणाम तथा उस परिणाम के लिए गीत के बोलों की कितनी व कैसी आवश्यकता है, इस सम्बन्ध में समाधानकारक एवं शास्त्रीय दृष्टिकोण से स्पष्टीकरण करना।

६. नाट्य संगीत का उत्तम निरीक्षण करके उसमें कौनसे संशोधन की आवश्यकता है, यह निश्चित करने का प्रयत्न करना।

७. श्रुति तथा स्वर का नवीन शास्त्रीय पद्धति से निरीक्षण करना, अति कोमल तीव्रतरादिक स्वरों का विशिष्ट रसोत्पत्ति में क्या उपयोग हो सकता है, इसका विचार विद्वज्जनों की परिषद में करना।

८. दिनगेय तथा रात्रिगेय रागों का शास्त्रसम्मत एवं सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध प्रस्थापित करना।

९. प्रत्येक राग का काल निर्णीत करके, वह काल नियम प्राचीन काल से संगीत में क्यों व कैसे आया, यह निश्चित करके समाज के सामने प्रस्तुत करना।

१०. प्रचलित नृत्य-पद्धति के गुण-दोष खोजकर इस कला का उत्कर्ष किस प्रकार होगा, इस सम्बन्ध में उपाय सोचना।

११. दक्षिण तथा उत्तर के संगीत का ऐसा सुयोग करके दिखाना कि जिससे दोनों पद्धतियों का हित होकर संगीत को उत्तम राष्ट्रीयत्व प्राप्त हो।

१२. प्राचीन उपलब्ध ग्रन्थों के भाषान्तर मराठी में कराकर पुस्तकें प्रकाशित करना एवं अपने शहर में एक बड़ा संगीत पुस्तकालय स्थापित करना।

१३. अपने शहर में एक प्रकार के संगीत विद्यालय स्थापित करना तथा उनमें योग्य विद्वानों की नियुक्ति करके उनको युगानुकूल चलाकर दिखाना।

१४. विशेष कलावन्तों के लड़कों के लिए एक पृथक विद्यालय स्थापित करना तथा उनमें घरानेदार एवं अनुभवी कलावन्तों को नियुक्त करके परम्परागत कला को जीवित रखने का प्रयत्न करना।

१५. प्राचीन अथवा अर्वाचीन अप्रसिद्ध रागों के 'रेकार्ड' लेकर उन्हें पुस्तकसंग्रहालयों में रखना तथा उनका उपयोग समस्त शोधकर्ता विद्यार्थी कर सकें, ऐसी व्यवस्था करना—आदि-आदि।

यह तथा ऐसी और भी कुछ बातें अभी रह गई हैं। तुम तरुण एवं उत्साही हो, इसलिए मुझे आशा है कि तुम इनकी ओर ध्यान देकर यश प्राप्त करोगे। इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत प्रयत्न की आवश्यकता होगी, बहुत स्वार्थ त्याग करना होगा एवं बहुत-सी भली बुरी टीका-टिप्पणी सहन करनी पड़ेंगी। परन्तु मुझे विश्वास है कि तुमने यदि कठिन परिश्रम करने का और फलाफल ईश्वर को सौंपने का निश्चय कर लिया तो तुमको पर्याप्त सफलता तथा यश प्राप्त होगा। मैं जीवित रहा तो तुम्हारे कार्य में यथाशक्ति एवं यथामति सहयोग देने के लिए सदैव तत्पर रहूँगा। परन्तु यह सब अब ईश्वर के अधीन है। जितनी सेवा मुझसे लेने का उसने निश्चय किया होगा, उतनी वह लेगा ही। अस्तु, इस प्रसंग पर दी गई जानकारी तुम्हारे लिए पर्याप्त होगी, ऐसा समझकर अब मैं तुमसे आज्ञा लेता हूँ।

* समाप्त *